NH Debate – 48

"आर्य समाज के दो रूप क्यों अर्थात एक हांडी में दो पेट क्यों?"

क्या कारण रहे कि आर्य समाज ने शहरी वर्ग के लिए अलग चेहरा और ग्रामीण वर्ग के लिए अलग चेहरा चलाया, जिसको आजतक इसको सबसे ज्यादा अनुसरण करने वाला जाट ही समझ नहीं पाया?

आखिर क्यों शहरों में तो इंग्लिश पद्दति के डी. ए. वी. (दयानंद एंग्लो विद्यालय) स्कूल और गाँवों के लिए संस्कृत-हिंदी के गुरुकुल खोले गए?

शहरों के डी. ए. वी. स्कूलों में तो को-एजुकेशन लगाई गई और गाँवों के गुरुकुलों में लड़की को लड़के के लिए आग में घी का काम करने वाली बता के, लड़कों के अलग और लड़कियों के अलग गुरुकुल बनाये गए?

शहरों में तो वही दयानंद ऋषि के अनुयायी अंग्रेजी पढ़ते रहे और गाँवों में उसी दयानंद को अंग्रेजों का दुश्मन बता के प्रचारित किया जाता रहा? जिसका सबसे बड़ा नुक्सान यह हुआ कि जाट-पिछड़ा-दलित सब अंग्रेजी पढ़ने से विमुख रहे और बस हिंदी और संस्कृत में ही सारी विद्वत्ता ढूंढते रहे| और आजतक का यह बना इनके ग्रामीण का ग्रामीण ही बने रहने का दुर्भाग्य?

क्या इसीलिए ही तो नहीं जो जाट-दलित-पिछड़ा शहरों में निकला, वो लौटकर गाँवों की ओर देखना भी पसंद नहीं करता?

और वो भी यह सब एक ही आर्यसमाज के झंडे तले, आखिर क्यों किये गए एक हांडी में दो पेट?

जाट समाज का युवा और ग्रामीण आँचल का दलित व् पिछड़ा विचारे इस पर|

Author: Phool Malik

Publisher: Nidana Heights

Dated: 18/11/14